9

स्कन्द कार्त्तिकेय की विलक्षण प्रतिमा

रत्न चन्द्र अग्रवाल

भारतीय शैव परम्परा में स्कंद-कार्त्तिकेय का शिव एवं पार्वती से अटूट सम्बन्ध सर्वज्ञात है। कुषाण काल से ही मूर्तिकला एवं प्राचीन मुद्राओं पर स्कंद का प्रदर्शन उपलब्ध होता है। इस संबंध में अनेक लेख एवं ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। लेखयुक्त मथुरा की एक कुषाण कालीन प्रतिमा मथुरा के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित है। प्रतिमा में शक्ति से ही स्कंद की पहचान होती है, क्योंकि वाहन एवं अन्य लाञ्छनों का यहाँ अभाव है। कालान्तर में स्कन्द के साथ उनके वाहन *मयूर* एवं आयुध रूप में *कुक्कुट* का भी अंकन किया गया है।

शिव-पार्वती के अतिरिक्त, महाभारत एवं अन्य ग्रन्थों में, कार्त्तिकेय को अग्निपुत्र, गंगापुत्र[1] एवं ब्रह्मापुत्र - सनत्कुमार भी कहा गया है। स्कन्द की *ब्रह्मशास्ता* अभिप्राय द्योतक प्रतिमाएँ भी बनने लगीं। राजस्थान में जयपुर के निकट आबानेरी से प्राप्त प्रतिहार कालीन छः हाथों वाली मयूरारूढ़ स्कंद मूर्ति के दाहिने हाथ में पुस्तक की विद्यमानता इसके *ब्रह्मशास्ता* स्वरूप की द्योतक है। प्रस्तुत मूर्ति जयपुर के केन्द्रीय राज्य संग्रहालय में प्रदर्शित है। जयपुर[2] के समीप *नकटी माता* मंदिर की प्रतिमा (मूलतः क्षेमंकरी दुर्गा) ईसा की नवीं शती की एक महत्त्वपूर्ण कृति है। पूर्वोन्मुख इस देवीभवन के गर्भगृह के उत्तरी छोर की ताक में त्रिमुखी स्कंद की मयूरारूढ़ प्रतिमा जड़ी है, यहाँ स्कंद के बायें ओर के ऊपर के हाथ में सर्प की विद्यमानता शैव संदर्भ की प्रतीक है। ऐसे संदर्भ अत्यल्प हैं।

बीसवीं शती के प्रारम्भ में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट[3] में सर जॉन मार्शल ने पूर्व ग्वालियर राज्य स्थित *रानोद* (अब मध्य प्रदेश) की विवरण रहित एक विलक्षण षण्मुख स्कंद प्रतिमा प्रकाशित की थी जो ईसा की 16-17वीं शती की कृति प्रतीत होती है (चित्र 9.1)। पहली बार यहाँ स्कंद एवं विष्णु के संयुक्त रूप की अभिव्यक्ति हुई है। स्कंद के चार मुख स्पष्ट हैं किन्तु पार्श्व मुखों की केवल ठोड़ियाँ ही दिखाई देती हैं। शीर्ष भाग पर जटाजूट है जिसके ऊपर पीछे की ओर सर्पफण वितान है। देवता की गर्दन पर हँसुली व गले में सर्प लिपटा है, जिसकी पूँछ दाहिने घुटने के पास होकर नीचे बैठे मयूर के मुख में पहुँच गई है। गुप्तकालीन मूर्तियों के समान स्कंद मयूर पर दोनों ओर पैर लटकाए बैठे हैं।

रानोद की विवेच्य स्कंद मूर्ति में स्कंद के छः मुखों के अतिरिक्त बारह हाथ भी स्पष्ट हैं। बारह करों में मात्र चार आयुध विशेष रूपेण उल्लेखनीय हैं। ऊपर के दक्षिण हाथ में हनुमान द्वारा धारण किया जाने वाला मुद्गर (गदा) और बाये में सनाल पद्म है। दक्षिणवर्त्ती नीचे कर में शंख व वामवर्ती कर में चक्र को मजबूती से पकड़ा गया है। शिल्पी ने इस षण्मुख व द्वादशमुख स्कंद मूर्ति के चार करों में वैष्णव आयुधों का तक्षण कर शैव प्रतिमा के वैभव में अपार वृद्धि की है। अभी तक भारतीय शिल्प में स्कंद प्रतिमा के साथ विष्णु के आयुध शंख-चक्र-गदा व पद्म की

Pl. 9.1: Skanda with snake, Ranod

विद्यमानता ज्ञात नहीं है। हमें ऐसे शिल्प एवं साहित्यिक संदर्भों की प्रतीक्षा करनी होगी जो *रानोद* की इस अत्यल्प ज्ञात स्कंद प्रतिमा का विवेचन कर सकें। स्पष्ट है कि शिल्पी ने स्कंद के शेष आठ हाथों में आयुधों के प्रदर्शन पर ध्यान नहीं दिया है, केवल वैष्णव अभिप्राय की अभिव्यक्ति तक ही वह केन्द्रित रहा है। ये सब तथ्य *रानोद* स्कंद मूर्ति की महत्ता दर्शाते हैं, यद्यपि प्रतिमा अति प्राचीन नहीं है।

(कार्तिकेय के गले में पड़ा हुआ साँप घुटनों के बीच में पहुँचकर समाप्त हो जाता है। यहाँ उसकी पूँछ स्पष्ट है। मयूर के गले में दिखलायी देने वाला साँप दूसरा है जिसे मोर ने अपनी चोंच में पकड़ा है। स्कंद के गले में पड़ा सर्प वस्तुतः रोचक है। उत्तर भारत में स्कन्द के सर्प से संबंध वाली परंपरा कदाचित मूलतः दक्षिण भारत की देन है, जैसा इसी अंक में प्रकाशित डॉ. ए.एल्. श्रीवास्तव के लेख से ध्वनित होता है—**संपादक**)

संदर्भ

1. *महाभारत,* शल्य पर्व 45, श्लोक 85-86
2. R.C.Agrawala, 'Skanda-Karttikeya in Sculptures from Rajasthan', *Lalit Kala* 3-4, fig. 2, pp. 109-11.
3. ASIAR. 1918-19, Kolkata, 1921, pl. 13-D.